समुदाय की समझ: समाज एवं समुदाय

डॉ० प्रवीण कुमार तिवारी

सह आचार्य

शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

समुदाय की समझ: समाज एवं समुदाय

समुदाय: परिचय

समुदाय शब्द समाजशास्त्र की महत्वपूर्ण अवधारणाओं में से एक है। आम बोलचाल की भाषा में सामान्यता समुदाय का अर्थ जाति विशेष, धर्म विशेष, प्रजाति विशेष या जनजाति विशेष के रूप में लिया जाता है परंतु इसका समाजशास्त्रीय अर्थ सामान्य अर्थ से भिन्न है। समाजशास्त्र के अंतर्गत समुदाय को क्षेत्रीय अवधारणा माना गया है। जैसे किसी भी गांव, कस्बा, शहर, महानगर, प्रांत या देश को एक समुदाय माना जाता है। एक क्षेत्र विशेष में रहने वाले सभी लोगों के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

समुदायः परिचय

कोई भी गांव, कस्बा, नगर, प्रांत आदि अपने आप में एक समुदाय हैं। समुदाय में रहने वाले लोग अपना संपूर्ण जीवन उसी के अंतर्गत जीते हैं, तथा किसी खास उद्देश्य के लिए नहीं, बल्कि विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उसमें सदस्य के रूप में रहते हैं। व्यक्ति के जीवन के सभी क्रियाकलाप समुदाय में सम्पादित होते हैं। समुदाय के सदस्यों के बीच 'हम' की भावना या 'सामुदायिक भावना' होती है। एक समुदाय अपने आप में आत्म निर्भर होता है तथा अपने सदस्यों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ होता है।

समुदाय: परिचय

यह एक ऐसा समूह है जिसे जानबूझकर नहीं बनाया जाता है बल्कि समय के साथ-साथ या स्वत: ही विकसित हो जाता है। समुदाय के लोगों में एकता की भावना भी पाई जाती है जो विभिन्न अवसरों पर देखने को मिलती है। एक समुदाय की अपनी कुछ खास परंपराएं खान-पान, रहन-सहन आदि के नियम होते हैं जो लोगों के व्यवहार को निर्देशित और नियंत्रित करने में योगदान देते हैं।

समुदाय: परिभाषा

- सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री मैकाइवर एवं पेज ने अपनी रचना 'सोसाइटी' में लिखा है, "जब कभी किसी छोटे या बड़े समूह के सदस्य इस प्रकार साथ-साथ रहते हैं कि वह किसी खास हित में ही भागीदार नहीं होते बल्कि सामान्य जीवन की मूलभूत परिस्थितियों में भाग लेते हैं तो ऐसे समूह को समुदाय कहा जाता है।"

समुदायः परिभाषा

प्रोफेसर किंग्सले डेविस ने समुदाय को परिभाषित करते हुए कहा है कि- ‘समुदाय सबसे लघु क्षेत्रीय समूह है, जिसमें सामाजिक जीवन के सभी पहलु आ जाते हैं।’

मेन्जर के अनुसार, “वह समाज जो एक निश्चित भू भाग में रहता है समुदाय के रूप में जाना जाता है।”

समुदाय: परिभाषा

बोगार्ड्स के अनुसार समुदाय, "कुछ अंगों में हम की भावना वाला सामाजिक समूह है जो एक निश्चित क्षेत्र में निवास करता है।"

अगर बोगार्ड्स की परिभाषा को ध्यान से देखें तो उसमें तीन तत्वों पर ध्यान दिया गया है :

- हम की भावना
- निश्चित क्षेत्र
- सामाजिक समूह

समुदाय की व्यापक परिभाषा

सारांशत: समुदाय का तात्पर्य ऐसे मानव समूह से है जो किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में निवास करता है और जिन में ‘हम’ की भावना या सामुदायिक भावना पाई जाती है तथा जिनकी समान रुचियां, आदतें और क्रियाएं होती हैं और जो सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं में एक दूसरे से संबंधित होते हैं।

समुदाय के निर्माण के आवश्यक तत्व

किसी समुदाय के निर्माण के लिए कम से कम तीन आवश्यक तत्व होने आवश्यक है:

- व्यक्तियों का समूह
- निश्चित भौगोलिक क्षेत्र
- समुदाय के सदस्यों के अंतर्गत पाई जाने वाली सामुदायिक भावना

व्यक्तियों का समूह

समुदाय के निर्माण के लिए पहली शर्त्त है: व्यक्तियों के समूह का होना। बिना व्यक्तियों के समूह के 'व्यक्तियों के सामान्य जीवन' की कल्पना नहीं की जा सकती है और न ही 'सामुदायिक भावना' के विकास की अपेक्षा की जा सकती है अत: किसी भी समुदाय के निर्माण के लिए व्यक्तियों के समूह का होना अनिवार्य शर्त है।

निश्चित भौगोलिक क्षेत्र

किसी भी समुदाय के लिए उसका एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में निवास करना दूसरी आवश्यक शर्त है। जब तक कोई मानव समूह किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में निवास नहीं करता है तब तक उसे समुदाय का दर्जा नहीं दिया जा सकता। गांव, कस्बा, शहर, महानगर, प्रांत इत्यादि को समुदाय इसीलिए कहा जाता है कि इनमें से प्रत्येक का एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र होता है।

निश्चित भौगोलिक क्षेत्र

किसी मानव समूह के क्षेत्र विशेष में रहने से तथा जीवन की सामान्य गतिविधियों में भाग लेने से समूह के लोगों में धीरे-धीरे अपनत्व की भावना पनपने लगती है। निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में लंबे समय तक रहने से लोगों में सामाजिक अनुक्रिया की मात्रा बढ़ती है जो कि सामाजिक संबंधों के निर्माण में भी सहायक होती है।

सामुदायिक भावना

समुदाय के सदस्यों के मध्य 'सामुदायिक भावना' समुदाय निर्माण के तीसरे आवश्यक तत्व के रूप में समझा जा सकता है। सामान्य बोलचाल की भाषा में हम अक्सर लोगों को कहते सुनते हैं कि 'हम सब एक हैं' और 'यह हमारा समुदाय है' 'हमारे समुदाय अन्य समुदायों से भिन्न है' 'हमारा देश सर्वश्रेष्ठ है' 'हमारी एकता को कोई तोड़ नहीं सकता' इत्यादि यह सभी सामुदायिक भावना के उदाहरण हैं। जब मानव समूह किसी भौगोलिक क्षेत्र में लंबे समय तक साथ-साथ रहते हैं, एक दूसरे के सुख दुख में भागीदार होते हैं, सामूहिक हितों के प्रति जागरुक होते हैं और आवश्यकता पड़ने पर समूह के हित में बड़ा त्याग करने को तैयार रहते हैं तो उनमें सामुदायिक भावना या 'हम' की भावना का विकास स्वत: ही हो जाता है।

समुदाय की विशेषताएं

- भौगोलिक विशेषता (Territorial Features)
- विशिष्ट नाम (Particular Name)
- स्थायीपन (Permanence)
- सामान्य जीवन (Common Life)
- स्वतः विकास (Spontaneous Growth)
- मूर्तता (Concreteness)
- व्यापक उद्देश्य (Wider Goals)

समुदाय की विशेषताएँ

- सामान्य व्यवस्था (Common Rules)
- सामुदायिक भावना (Community feeling / Sense of Belongingness)
- समानताओं के क्षेत्र (Area of likeness)
- आत्मनिर्भरता (Self Sufficiency)
- वैधानिक अस्तित्व नहीं (No legal status)
- अनिवार्य सदस्यता (Compulsory Membership)

समुदाय के प्रकार

अलग-अलग मानदंडों के आधार पर विभिन्न समाजशास्त्रियों ने समुदाय के विभिन्न प्रकारों का वर्णन किया है।

किंग्सले डेविस ने समुदायों के वर्गीकरण के लिए चार तत्वों या कसौटियों को काम में लिया है:

- जनसंख्या का आकार
- समुदाय के चारों ओर के प्रदेश का विस्तार, संपत्ति एवं आबादी
- संपूर्ण समाज में समुदाय के विशेषीकृत कार्य एवं
- समुदाय के संगठन का प्रकार

इन तत्वों के आधार पर आदिम एवं सभ्य समुदाय अथवा ग्रामीण तथा नगरीय समुदाय के बीच के अंतर को स्पष्ट किया जा सकता है।

समुदाय के प्रकार

मैकाइवर एवं पेज के अनुसार समुदाय तीन प्रकार के होते हैं

- ग्रामीण समुदाय
- नगरीय समुदाय एवं
- क्षेत्रीय समुदाय

समुदाय के प्रकार

गार्डन के अनुसार समुदाय चार प्रकार के होते हैं

- ग्रामीण समुदाय
- नगरीय समुदाय
- क्षेत्रीय समुदाय और
- राष्ट्रीय समुदाय

समुदाय एवं समाज में अंतर

आम बोलचाल की भाषा में समुदाय और समाज शब्द का प्रयोग बार-बार समानार्थी शब्दों के रूप में सुनने में आता है परंतु दोनों में समाजशास्त्रीय दृष्टि से स्पष्ट अंतर है:

समुदाय एवं समाज में अंतर

समुदाय

- समुदाय व्यक्तियों का समूह है।
- समुदाय में मूर्तता के गुण पाए जाते हैं।
- समुदाय के लिए एक निश्चित क्षेत्र या भू-भाग का होना आवश्यक है।

समाज

- समाज को सामाजिक संबंधों का जाल के रूप में जाना जाता है।
- समाज एक अमूर्त अवधारणा है।
- समाज के लिए किसी निश्चित क्षेत्र की आवश्यकता नहीं है।

समुदाय एवं समाज में अंतर

समुदाय

- समुदाय में 'सामुदायिक भावना' का होना आवश्यक है।
- समुदाय में सहयोग पर ज्यादा जोर दिया जाता है।
- समुदाय का एक विशिष्ट नाम होता है।

समाज

- समाज के लिए सामुदायिक भावना का होना आवश्यक नहीं है।
- समाज में सहयोग के साथ-साथ संघर्ष भी पाए जाते हैं।
- समाज का कोई ऐसा विशिष्ट नाम नहीं होता है।

समुदाय एवं समाज में अंतर

समुदाय

- समुदाय के सदस्यों में समरूपता पाए जाने की संभावना ज्यादा रहती है।
- समुदाय की प्रकृति स्थानीय होती है। इन में अनेक समूह समितियां संघ आदि होते हैं।

समाज

- समाज के सदस्यों में विभिन्नता पाए जाने की संभावना ज्यादा रहती है।
- समाज की प्रकृति समग्रता युक्त है और इसे उसकी समग्रता में ही समझना होता है।

समुदाय एवं समाज में अंतर

समुदाय	समाज
समुदाय में व्यक्ति के स्वतंत्र विकास की सीमित संभावनाएं होती है।	समाज में व्यक्ति के स्वतंत्र विकास की असीमित संभावनाएं होती है।
समुदाय समाज का एक भाग है।	समाज अपेक्षाकृत व्यापक है।
एक समुदाय में कई समाज नहीं रह सकते ।	एक समाज में कई समुदाय हो सकते हैं।

आज हमने सीखा

- समुदाय क्या है?
- समुदाय को कैसे परिभाषित किया गया है?
- समुदाय के आवश्यक तत्व कौन कौन से हैं?
- समुदाय के प्रकार कौन कौन कौन से हैं?
- और समुदाय एवं समाज एक दूसरे से किस प्रकार भिन्न हैं?

धन्यवाद